International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाज में व्याप्त महिलाओं के प्रति सामाजिक बुराइयों के खलाफ आवाज उठाने के लए महात्मा गांधी का योगदान- एक वश्लेषण

Dr. Reena
Department of Political Science, Vaish College, Bhiwani, Haryana 127021
Email- ashureena1142@gmail.com

अमूर्त

भारत में महिलाओं की स्थिति एवं उनकी स्थिति के संबंध में महात्मा गांधी जी के वचारों को यह शोध पत्र सम र्पत है। प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं से संब धत व भन्न कुरीतियों जैसे पर्दा प्रथा वधवा पुन र्ववाह ना होना तलाक सती प्रथा महिला श्रम कानून महिलाओं की शक्षा संबंधी प्रावधान जन्म के समय लंग जांच आदि पहलुओं पर वचार कया गया है। साथ-साथ महिलाओं का समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में भू मका का भी अध्ययन कया गया है

कुंजी शब्द:*महात्मा गांधी, महिला, सामाजिक समस्याएं और अ धकारिता।*

परिचय

महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था , जो भारत में राष्ट्र पता बापू के नाम से प्र सद्ध हुए। महात्मा गांधी जी वह महान नेता थे जिन्होंने भारत को ब्रिटिश उपनिवेशवाद के अत्याचार से जिन्होंने 200 वर्षों तक भारत पर राज कया , से मुक्त करवाया। महात्मा गांधी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके अहिंसा एवं सत्याग्रह संबंधी वचारों के लए पहचाना जाता है और उनके जन्मदिवस को भी अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। महात्मा गांधी के पता का नाम करमचंद गांधी एवं माता का नाम पुतलीबाई था इनके पता गुजरात के काठियावाड़ में छोटी सी रियासत पोरबंदर के दीवान थे उनकी माता धा र्मक वचारों वाली महिला थी जिसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। 13 वर्ष की आयु में महात्मा गांधी का ववाह कस्तूरबा के साथ हुआ। गांधी जी बचपन में मेधावी छात्र नहीं थी पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता था उनकी प्रारं भक शक्षा पोरबंदर में ही हुई तथा हाई स्कूल की शक्षा उन्होंने राजकोट से प्राप्त की तत्पश्चात मैट्रिक की परीक्षा के लए उन्हें अहमदाबाद भेज दिया गया। वकालत की पढ़ाई के लएगांधीजी इंग्लैंड गए। 18 सो 91 में गांधीजी ने अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी की तत्पश्चात अपने कसी मुकदमे के संबंध में उन्हें द क्षण अफ्रीका जाना पड़ा वहां जाकर उन्होंने देखा क लोगों के साथ रंग के आधार पर भेदभाव कया जाता है गोरे लोगों को श्रेष्ठ और काले लोगों को नियम समझा जाता था काले लोगों से सभी गंदे काम व शारीरिक श्रम के सारे काम करवाए जाते थे।जिसके खलाफ उन्होंने आवाज उठाने की सोची। भारत वापस आने के पश्चात महात्मा गांधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों व उनकी तानाशाही के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वरुद्ध भारतीय समाज को एकजुट करने के लए प्रथम कया में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लए अनेक आंदोलन चलाए जिसके लए उन्हें अनेक बार जेल भी जाना पड़ा। गांधीजी द क्षण अफ्रीका में अपनाया अहिंसा और सत्याग्रह संबंधी अस्त्र 1917 में बिहार के चंपारण जिले में कसानों पर हो रहे अत्याचारों के खलाफ आवाज उठाने व उनकी कल्याण के लए आजमाया। यह आंदोलन कसानों की स्थिति में सुधार के लए वह जमीदारों व ब्रिटिश हुक्मरान के खलाफ था। 1920 में महात्मा गांधी नेअसहयोग आंदोलन 1930 में स वनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की।

महात्मा गांधी जी ने 8 मई 1933 से छुआछूत वरोधी आंदोलन की शुरुआत की थी। इस दौरान महात्मा गांधी ने आत्म-शु द्ध के लए 21 दिन का उपवास कया। इस उपवास के साथ एक साल लंबे अ भयान की शुरुआत हुई। उपवास के दौरान गांधी जी ने कहा था- या तो छुआछूत को जड़ से समाप्त करो या मुझे अपने बीच से हटा दो। इससे पहले 1932 में गांधी जी ने अ खल भारतीय छुआछूत वरोधी लीग की स्थापना की थी। द लत समुदाय के लए हरिजन नाम भी महात्मा गांधी ने दिया था। गांधी जी ने 'हरिजन' नामक साप्ताहिक पत्र का भी प्रकाशन कया था। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की मुंबई में हुई रैली में गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। आंदोलन शुरू होते ही अंग्रेजों ने आंदोलनकारियों पर जमकर कहर ढाया। गांधी समेत कई बड़े नेता गरफ्तार कर लए गए। इस आंदोलन ने दूसरे वश्व युद्ध में उलझी ब्रिटिश सरकार की मुश्किलें बढ़ा दी। अंग्रेजों को आंदोलन खत्म करने में एक साल से ज्यादा का समय लग गया। यह भारत की आजादी में सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन था।

महात्मा गाँधी का शक्षा में योगदान यह मानना था क भारतीय शक्षा सरकार के नहीं अ पतु समाज के अ धन है, इस लए महात्मा गाँधी भारतीय शक्षा को 'द ब्यूटिफुल ट्री' कहा करते थे। शक्षा के क्षेत्र में उनका वशेष योगदान रहा। भारत का हर नागरिक श क्षत हो यही उनकी इच्छा थी। गाँधी जी का मूल मंत्र 'शोषण वहिन समाज की स्थापना' करना गांधी जी ने कहा था क स्वतंत्र भारत प्राप्त करने एवं भारत में स्वराज की स्थापना करने में महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान है ।द क्षण अफ्रीका में भी महिला सशक्तिकरण का वचार उनके सत्याग्रह आंदोलन का एक महत्वपूर्ण अंग था। गांधी जी के द्वारा चलाए गए सत्याग्रह आंदोलन में भी महिलाओं ने बड़ी संख्या में बढ़ चढ़कर हिस्सा लया एवं पु लस के अत्याचारों का सामना कया और सलाखों के पीछे भी गई कई महिलाओं की जेल के अंदर मृत्यु भी हो गई थी परंतु फर भी उन्होंने हर परिस्थितियों का डटकर मुकाबला कया जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने और एक स्वतंत्र और स्वराज भारत बनाने में शुद्ध, दृढ़, सहिष्णु और आत्म-नियंत्रित चरित्र वाली भारतीय महिलाओं के योगदान को महत्वपूर्ण महत्व दिया है। वे संपूर्ण भारत के वकास में महिलाओं की स क्रय भागीदारी की आवश्यकता महसूस करते हैं। द क्षण अफ्रीका में महिला सशक्तिकरण का वचार उनके सत्याग्रह आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वहां सत्याग्रह में उनके साथ बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लया और पु लस के अत्याचारों का सामना बहादुरी से करते हुए शहीद भी हो गई।

भारतीय संस्कृति के अनुरूप वेदों में कहा गया है क," यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवतायत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलः क्रयाः"अर्थात जिस परिवार में स्त्रियों को उ चत स्थान दिया जाता है उनकी पूजा की जाती है उनकी मान मर्यादा प्रतिष्ठा का ख्याल रखा जाता है देवता वही निवास करते हैं और जहां पर उन्हें सम्मान नहीं दिया जाता वहां पर देवता भी रहना पसंद नहीं करते हैं उस परिवार के सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। महात्मा गांधी जी ने अपनी माता के धा र्मक जीवन से प्रेरणा लेकर अन्याय और अत्याचार के वरुद्ध उपवास जैसी शक्ति के माध्यम से लड़ने का सबक लया। उन्होंने कहा क अहिंसा के अंदर पीड़ा सहने की अ वश्वसनीय शक्ति होती है क्यों क उसके अंतर्गत शाश्वत प्रेम का समावेश होता है और यदि देखा जाए तो महिलाओं के अंदर असहनीय पीड़ा सहन करने की शक्ति होती है और वह शाश्वत प्रेम का भंडार होती है। महात्मा गांधी के अनुसार, "महिलाएं एक मां के रूप में, एक निर्माता के रूप में पुरुषों के करीब एक प्रतिष्ठित स्थान पर रहती हैं और चुपचाप उन्हें सही रास्ता दिखाने के लए एक मार्गदर्शक के रूप में भू मका निभाती हैं। उन्हें शांति की कला सखाने के लए बनाया गया है।"

गांधी जी भारत मैं जिस राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे उसमें महिलाओं को सर्वोच्च स्थान दिया उन्होंने कहा क महिलाएं अहिंसा का अवतार होते हैं जो सब गुणों को सेट कर उन्हें सद्गुणों में परिवर्तन करने की शक्ति रखती है। एक महिला पुरुष के प्रत्येक कार्य में उसकी सं गनी होती है और पुरुष के समान भी मान सक क्षमताओं में सक्षम होती है। इस लए समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उसे समान अवसर प्रदान की जाने आवश्यक हैं और उसकी गरिमा और प्रतिष्ठा का सम्मान कया जाना भी आवश्यक है। महिलाएं पुरुषों के समान है एवं यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा क यदि उन्हें समान अवसर प्रदान कए जाएं तो वह पुरुषों से आगे भी निकल सकती हैं महिलाओं को पुरुषों के हाथों का खलौना नहीं समझना चाहिए ना ही उन्हें कोई प्रतिस्पर्धी व्यक्ति के रूप में आंका जाना चाहिए अ पतु समाज रुपी संसार के लए नर और नारी दोनों ही समान है दोनों के बिना ही इस संसार का सफलतापूर्वक संचालन संभव नहीं है। नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं।

भारत में महिलाओं का इतिहास

प्राचीन काल वैदिक युग में 2500वर्ष पूर्व महिलाओं को भारतीय समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। बाल ववाह की प्रथा व्याप्त नहीं थी शादी से पहले एक लड़की से उसके ववाह के बारे में परामर्श लया जाता था तथा उसे अपने योग्य वर चुनने की पूरी आजादी प्राप्त थी। गार्गी एवं मैत्री का उच्च शक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं में नाम आता है। मौर्य कालीन युग 325 से 187 ईसा पूर्व में महिलाओं का महिलाओं की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार महिलाओं पर पुरुषों का वर्चस्व स्था पत हो रहा था गुप्त काल में भी भारतीय समाज में महिलाओं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की स्थिति काफी बेहतर थी उन्हें स्वयंबर का अ धकार प्राप्त हुआ एवं समाज में उसे ऊंच दर्जा प्रदान कया जाता था। गुप्त काल की समाप्ति के पश्चात भारतीय समाज में सती प्रथा का आरंभ हुआ जिसके परिणाम स्वरूप एक स्त्री को जिसके पति की मृत्यु हो गई है उसे अपनी पति की चता के साथ ही अग्नि में जिंदा जलने के लए बिठा दिया जाता और देवी का दर्जा दे दिया जाता जिसके वजह से महिलाओं की

महात्मा गांधी कसी व्यक्ति की उन्नति एवं वकास में शक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देती थी और इसी के साथ वह महिलाओं को भी श क्षत करने के पक्ष में थे उनका कहना था क महिलाओं की शक्षा वर्तमान समय की आवश्यकता है जो उसके नैतिक वकास को सुनिश्चित करती है और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मलाकर चलने के लए उसे सक्षम बनाती है गांधी जी के अनुसार महिलाएं कसी भी परिस्थितियों में पुरुषों से पीछे नहीं है वास्तव में गांधीजी महिलाओं को ज्ञान ,सद्गुण सहनशीलता,त्याग, वश्वास, प्रेम, श्रद्धा , वनम्रता एवं वश्वास जैसे गुणों की देवी मानते थे।

गांधीजी ने कहा-

"महिला समान मान सक क्षमताओं के साथ उपहार में दी गई पुरुष की साथी है। उसे पुरुष की गति व धयों में भाग लेने का अ धकार है और उसे उसके साथ स्वतंत्रता और स्वतंत्रता का समान अ धकार है।"इस लए महिलाओं को भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान अ धकार प्राप्त होने चाहिए। देश के निर्माता के रूप में महिलाओं की भू मका महत्वपूर्ण है क्यों क आने वाली पीढ़ियों को जन्म देने वाली उनका पालन पोषण करने वाली और उन्हें संस्कारों से परिपूर्ण करने वाली महिला ही होती है"

गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह अहिंसा के रास्ते पर चलने के लए जितने भी गुणों की आवश्यकता है वह सभी महिलाओं के अंदर पूर्ण रूप से व्याप्त पाए जाते हैं। महात्मा गांधी ने कहा क जब एक महिला बच्चे को जन्म देती है तो वह असहनीय पीड़ा को भी इस खुशी के साथ स्वीकार कर लेती है क वह एक नए जन्म का स्त्रोत बन रही है और उस बच्चे की चेहरे को देखकर वह अपनी असहनीय पीड़ा को क्षणों में ही भूल जाती है। इस लए गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में और समाज के पुनरुत्थान के लए अहिंसात्मक रास्ते को अपनाते हुए जिस पीड़ा को सहने की आवश्यकता महसूस की वह महिलाओं में सरल और सहज भाव से ही व्याप्त देखने को मली। महात्मा गांधी जी ने प्राचीन काल से वर्तमान समय तक महिलाओं केअनेकों ऐसे उदाहरण प्रस्तुत कएजो भारतीय समाज के लए आदर्श रही है जैसे मंदोदरी द्रौपदी सीता सा वत्री दमयंती यशोदा आदि। इन भारतीय महिलाओं में पुरुषों के समान ही मान सक क्षमता एं देखने को मलती हैं और कसी भी परिस्थिति में ही पुरुषों से कमजोर नहीं है उन्होंने यह दिखाया क महिलाओं को भी पुरुषों के समान अवसर अ धकार एवं स्वतंत्रता मलनी चाहिए। गांधी जी के शब्दों में योग करने के लए; "पत्नी पति की दासी नहीं बल्कि उसकी साथी और उसकी सहायिका और उसके सभी सुख-दुख में बराबर की भागीदार

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

होती है - पति के रूप में अपना रास्ता चुनने के लए स्वतंत्र।"भारत के राष्ट्र पता महात्मा गांधी जी ने महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन एवं सुधार लाने के लए भरसक प्रयास कए और कहा क समय के अनुरूप महिलाओं की स्थिति सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने चाहिए और उन्हें हर क्षेत्र में समान अ धकार प्रदान कए जाने चाहिए।गांधी ने कहा, "मनुष्य स्त्री से पैदा हुआ है, वह उसका मांस है और उसकी हड्डी की हड्डी है। अपने पास आओ और अपना संदेश फर से पहुंचाओ।" अर्थात महिलाओं को स्वयं को पुरुषों की दासी ना समझ कर उसके सम्मान समझना चाहिए और अपने अ धकारों के प्रति सजग रहना चाहिए।सामाजिक आचरण के नियमों का निर्धारण करते समय स्त्री और पुरुष दोनों का सहयोग एवं परामर्श अनिवार्य होना चाहिए। मध्यकालीन भारतीय समाज में महिलाओं को खु शयों के भोग वलास एवं सुख सु वधा का साधन माना जाता रहा है और उन्हें पुरुषों की जूती की उपमा दी गई थी और उनकी स्थिति दयनीय होने के पीछे पुरुषों सोचा समझा षड्यंत्र रहा है ले कन वर्तमान समय में हमें महिलाओं की स्थिति को पुणे स्था पत करना है और पुरुषों के बराबर उनकी भागीदारी निश्चित करनी है उन्हें इस बात का एहसास दिलाना है क वह कसी भोग वलास की वस्तु ना होकर समाज के निर्माता है समाज के वकास और उन्नति में उनका योगदान सराहनीय एवं अ वश्वसनीय है।

सामाजिक बुराइयों के खलाफमहात्मा गांधी का योगदान

पर्दा प्रथा

भारतीय समाज में पर्दा प्रथा बहुत लंबे समय से वद्यमान रही है पर्दे के माध्यम से हम कसी की प वत्रता की रक्षा नहीं कर सकते कसी भी व्यक्ति की रक्षा के लए उसे स्वयं भीतर से मजबूत बनना पड़ता है और प्रलोभन का सामना करने के लए तैयार रहना पड़ता है। एक व्यक्ति के आत्म संयम एवं मन की प वत्रता के द्वारा ही उसकी रक्षा की जा सकती है और उसे सांसारिक लोगों से दूर रखा जा सकता हैं। हिंदू एवं मुस्लिम धर्म में व्याप्त पर्दा प्रथा महिलाओं के वकास का नहीं अ पतु कहीं ना कहीं उनके वकास में बाधा ही बना है आवश्यकता इस बात की है क उनके अंदर आत्म वश्वास की भावना भरी जाए और समाज का ऐसा वर्ग जो उन्हें घृणा वासना की दृष्टि से देखता है उसमें सुधार कया जाए और स्त्री के महत्व एवं प वत्रता के वषय में उन्हें अवगत करवाया जाए।

दहेज प्रथा

गांधीजी के अनुसार तत्कालीन समय में दहेज प्रथा एक भयंकर दानव दानव के समान थी जो महिलाओं की दयनीय स्थिति का सबसे महत्वपूर्ण कारक थी। दहेज की मांग करके ससुराल वाले एक माता पता की बेटी का दाम लगाकर उसके स्त्रीत्व को कीमत को आंकते हैं। एक नारी की कीमत तो संपूर्ण ब्रह्मांड देकर भी नहीं आंकी जा सकती क्यों क संपूर्ण वश्व उसके अंदर ही समाहित होता है दहेज प्रथा एक ऐसे कलंक के समान है जो स्त्रियों की स्थिति को बद से बदतर बनाता जा रहा है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसके लए एक माता पता का कर्तव्य है क वह अपनी बेटी को दहेज के स्थान पर उसे शक्षा प्रदान करें और ऐसे व्यक्तियों एवं नव युवकों से नाता तोड़ ए जो दहेज की मांग करते हैं और अपने बेटों को ऐसे संस्कार दें क वह कसी की बेटी को घर लाते हुए पूरे मान सम्मान का ध्यान रखें और दहेज जैसी बुराई से दूर रहे।

बहु / पत्नी प्रथा

भारतीय समाज में मुस्लिम धर्म में बहु पत्नी प्रथा भी पाई जाती है अर्थात एक व्यक्ति एक साथ कई पत्नियों को रख सकता है ले कन यही बात महिलाओं पर लागू नहीं होती है जो हमारे समाज की पुरुष पुरुषों की मान सकता को दर्शाता है क वह कस प्रकार एक महिला को भोग वलास की वस्तु से अ धक कुछ नहीं समझता है उसकी मान मर्यादा का ध्यान नहीं रखता है। स्त्रियों को सम्मान की स्थिति से देखना चाहिए और एक व्यक्ति को एक ही महिला के साथ संबंध स्था पत करके उसके साथ आदर्श जीवन व्यतीत करते हुए समाज के लए भी एक आदर्श रूप प्रस्तुत करना चाहिए। भारतीय समाज में हमें अनेकों ऐसे उदाहरण मलते हैं जिसमें मुस्लिम धर्म से भन्न धर्म रखने वाले व्यक्ति जब दूसरी शादी करना चाहता है तो कानून की सजा से बचने के लए वह अपना धर्म परिवर्तन करके दूसरी शादी रचा लेता है ऐसे व्यक्तियों के लए कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान होना चाहिए।

कानून एवं वधान

पारंपरिक नियम एवं कानून पुरुष प्रधान समाज के द्वारा बनाए गए हैं जिनमें महिलाओं के साथ निष्पक्षता एवं समानता का व्यवहार नहीं कया गया है। उदाहरण के लए रावण के द्वारा सीता का अपहरण होने पर और राम के द्वारा उसे वापस अयोध्या लाए जाने पर जनता के कहने पर सीता को अपनी पतिव्रता के लए अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी ले कन यही बात अगर पुरुष पर लागू हो तो शायद उसे अग्नि परीक्षा नहीं देनी पड़ती। हमारे समाज में अनेकों ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जहां पर समान अपराध के लए महिलाओं के लए तो कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान कया है जब क पुरुषों से साधारण तरीके से बच जाते हैं तो हमें हमारी सोच में हमारी मान सकता में और उसके साथ-साथ कानूनों में भी बदलाव लाने की आवश्यकता है जो स्त्री और पुरुष दोनों को समान समझे और उन में कोई भेदभाव ना करें।

बाल ववाह

भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार का सबसे प्रमुख कारण बाल ववाह पाया जाता है महात्मा गांधी ने बाल ववाह का कड़ा वरोध कया और माता- पता को इसके हानिकारक परिणामों से अवगत करवाया । एक लड़का और लड़की जिसकी उम्र अभी खेलने की है शक्षा ग्रहण करने की है उसे निभा जैसे प वत्र और आदर्श बंधन में बांधकर होना केवल उनका बचपन छीन ते हैं बल्कि उनके जीवन के वकास की संभावनाएं भी ना के बराबर हो जाती हैं। गांधीजी ने बाल ववाह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के परिणामों को बहुत पास से अनुभव कया था क्यों क उनका ववाह भी कम आयु में कस्तूरबा जी के साथ हो गया था। बाल मन में चंचलता,नटखटपन, शरारत होती है बाल मन में वह समझदारी वह परिपक्वता नहीं होती जो वैवाहिक जीवन के लए आवश्यक होती है।

वधवा पुन र्ववाह ना होना

भारतीय समाज में महिलाओं के लए सबसे बड़ा कलंक वधवा पुन र्ववाह का ना होना है एक स्त्री के पति के मर जाने के पश्चात उसे ताउम्र वधवा के रूप में गुजारनी पड़ती है और इससे भी भयंकर पहले प्राचीन भारतीय समाज में एक महिला के पति के मर जाने के पश्चात उसे सती कर दिया जाता था अर्थात पति की चता के साथ ही उसे जला दिया जाता था जिससे भयंकर त्रासदी या पीड़ा एक स्त्री के लए नहीं हो सकती है। यदि हमें थोड़ी सी अग्नि छू भी जाती है तो हमें बहुत दर्द होता है तो सो चए उस महिला की क्या स्थिति होगी इसे जीते जी चता पर बिठा दिया जाता है और देवी का दर्जा दे दिया जाता है। जहां तक पुरुषों की बात आती है वहां उनकी पत्नी की मृत्यु हो जाने के पश्चात पुन र्ववाह होना बहुत आसान है और उन्हें पत्नी की चता में नहीं बिठाया जाता। और यदि कोई लड़की बालपन में वधवा हो जाती है तो उसका समस्त जीवन नर्क के समान हो जाता है जिसने कभी वैवाहिक जीवन का सुख ही नहीं होगा उसे ताउम्र कष्टों और पेड़ों के साथ व्यतीत करना पड़ता है जो क भारतीय समाज के लए सबसे दुखदाई स्थिति है महात्मा गांधी ने वधवा पुन र्ववाह का समर्थन कया और महिलाओं की स्थिति में सुधार के लए भरसक प्रयत्न कए।

तलाक का प्रावधान

हमारे समाज में बहुत बार हमें देखने को मलता है जब वैवाहिक जीवन में तनाव अवसाद और झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो पति पत्नी एक दूसरे से तलाक ले लेते हैं ।तलाक कसी भी समस्या का समाधान नहीं है क्यों क वैवाहिक स्थिति अनुशासन समर्पण एवं सहयोग की स्थिति मानी जाती है जो समाज के वकास और कल्याण में अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाती है ।समस्याओं का समाधान बैठकर कया जा सकता है बातचीत के माध्यम से बड़ी से बड़ी समस्या का भी हल खोजा जा सकता है। नैतिक उल्लंघन को नैतिक संयम और पश्चाताप के माध्यम से ठीक कया जा सकता है हिंदू धर्म में महात्मा गांधी जी का कहना है क हिंदू धर्म में महिलाओं एवं पुरुषों दोनों को आत्मसाक्षात्कार की स्वतंत्रता का होना बहुत जरूरी है महात्मा गांधी जी स्पष्ट रूप से कसी भी प्रकार के पुरुष वाद के खलाफ से और महिलाओं को समान अ धकार समान अवसर देने के पक्ष में थे।

नारी का यथो चत सम्मान

महात्मा गांधी का वचार है क नारी जिस भी रूप में है जैसे भी परिस्थितियों में है वह हमेशा सम्मान के योग्य है वह हमेशा पूजनीय है। “पत्नी पति की दासी नहीं है, बल्कि उसकी साथी और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उसकी सहेली है और सभी सुख-दुख में बराबर की भागीदार है - पति के रूप में अपना रास्ता चुनने के लए स्वतंत्र है।"

स्त्री की इच्छा के वरुद्ध कभी भी कोई कार्य चाहे वह शारीरिक है, मान सक है, अध्यात्मिक है, नहीं करना चाहिए क्यों क स्त्री के सम्मान से बढ़कर इस संसार में कुछ भी नहीं है। एक स्त्री को भी कसी भी परिस्थितियों में अपनी प वत्रता से समझौता नहीं करना चाहिए यदि परिस्थितियां अनुकूल भी होती है तो उसकी नैतिक शक्ति उसे यह अवसर प्रदान करती है क वह अपनी नैतिकता और प वत्रता भंग होने से पहले अपने जीवन को समाप्त कर सकती है हर परिस्थिति में एक महिला को अपनी प वत्रता को बनाए रखना चाहिए और पुरुष को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए क उसकी प वत्रता नैतिकता को भंग ना करें।।

जनसंख्या नियंत्रण

महात्मा गांधी के अनुसार ब्रह्मचर्य जीवन का एक अटल सत्य है जिसे प्रत्येक मनुष्य को जीवन में अपनाना चाहिए उन्होंने कहा क मनुष्य की रचना का उद्देश्य सर्फ शारीरिक संभोग जैसी प्रवृत्तियों के लए नहीं हुआ है अभी तू उसका जन्म सृजन के लए हुआ है इसी लए मनुष्य को संभोग केवल सृजन के उद्देश्य से ही करना चाहिए। एवं पुरुष दोनों का स्वयं पर नियंत्रण होना आवश्यक है एक स्त्री को भी अपने पति को संभोग के लए ना कहने की कला आनी चाहिए एक स्त्री का भी कर्तव्य है क वह मान सक गुलामी से मुक्त होकर अपने शरीर की प वत्रता को बनाए रखें और अपने जीवन साथी को भी इसके लए प्रेरित करें और पति पत्नी दोनों राष्ट्र सेवा एवं मानवता की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करें। इसके साथ-साथ गांधीजी जनसंख्या नियंत्रण के लए पुरुषों की नसबंदी को भी उ चत रास्ता मानते थे क्यों क उन्हें लगता था क मनुष्य का स्वभाव संभोग की प्रवृत्तियों के प्रति ज्यादा होता है आक्रमक होता है और वह सहयोग संभोग में 8 नियंत्रण को कम महत्व देते हैं इस लए ब्रह्मचर्य का पालन करने में एक पुरुष की व्यक्तिगत सफलता से आठ नियंत्रण का रास्ता भी खुलता है।

शक्षा

गांधी जी केमहिलाओं की शक्षा के संबंध में वचार उनके पारिवारिक आदर्शों पर आधारित है क्यों क उनका मानना था क पुरुष यदि पुरुष बाहरी गति व धयों में सर्वोच्च हैं तो महिला आंतरिक कार्यों की गति व धयों में सर्वोच्च हैं इसी लए महिलाओं एवं पुरुषों दोनों को ही दी जाने वाली शक्षा उनके जीवन में पूर्व निर्धारित उद्देश्यों एवं मनोकामना ओं के अनुरूप होनी चाहिए काली जी का मानना था क महिला एवं पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात एक ही सक्के के दो पहलू हैं इस लए दोनों की शक्षा को समान महत्व दिया जाना चाहिये

महात्मा गांधी के अनुसार भारत के सामाजिक आ र्थक राजनीतिक और सांस्कृतिक दासता की बे ड़यों को दूर करने में महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाई है तथा इसके लए जो सत्याग्रह का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रास्ता है उस पर महिलाओं ने कंधे से कंधा मलाकर स्वतंत्रता सेनानियों का साथ दिया है महात्मा गांधी जी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने अपनी जिम्मेदारी उठाते हुए तक देश की आजादी के लए कुर्बान कर दिए और अपने दैनिक दिनचर्या के खर्चे से थोड़े-थोड़े बचाकर देश की आजादी में योगदान दिया। देश की आजादी के लए महात्मा गांधी जी द्वारा कए गए आग्रह को महिलाओं ने सहर्ष स्वीकार कया और बढ़ चढ़कर हिस्सा लया। महात्मा गांधी जी ने महिलाओं के आ र्थक आत्मनिर्भरता के लए भी प्रयास कए उन्होंने कहा क महिलाएं लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना के माध्यम से ना केवल स्वयं आ र्थक दृष्टि से आत्मनिर्भर बन सकती है अ पतु अपने आसपास रहने वाली महिलाओं एवं पुरुषों को भी आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान दे सकती है। गांधीजी ने कहा क भारतीय समाज में व्याप्त जाति प्रथा छुआछूत सांप्रदायिकता अनेक कुरीतियों को भी समाप्त करने में महिलाएं अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभा सकती हैं और महिलाओं की प्रत्येक क्षेत्र में दयनीय स्थिति के लए पुरुषों को जिम्मेदार ठहरायइतिहास महात्मा गांधी जी 24 मार्च 2021 को ओ डशा में आए जहां पर उनकी मुलाकात सरला देवी से हुए । सरला देवी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स क्रय भू मका निभाने वाली महिलाओं की एक सूची तैयार की जिसमें आदमी देवी लक्ष्मी बाई अवंती देवी इंदुमती दास करण लेखा मोहंती कृष्णा का मनी देवी को कला देवी आदि शा मल थी। 1932 में महात्मा गांधी जी के द्वारा भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सुधार लाने के लए अस्पष्टता के वरुद्ध क्रांति का बिगुल बजाया कस्तूरबा गांधी की मृत्यु के पश्चात रामादेवी 6 वर्ष के लए कस्तूरबा ट्रस्ट के रूप में नियुक्त कया गया जिनके मार्गदर्शन में कस्तूरबा ट्रस्ट ने सामाजिक सुधारों के लए प्रशंसनीय कार्य कया। महात्मा गांधी जी को भारत एवं वश्व में महिलाओं के सबसे अच्छे मत्र, परामर्शदाता एवं सुधारक के रूप में माना जाता है। महात्मा गांधी के जीवन में वचारों की शुद्धता एवं सादगी की परिपूर्णता व्याप्त थी उनका व्यक्तित्व संदेह से परे था। महात्मा गांधी जी ने जीवन भर महिलाओं के सुधार के लए प्रथम कए एवं उनका हर क्षेत्र में मार्गदर्शन कया ता क महिलाओं को जो उच्च स्थिति प्राप्त हुई थी वह उन्हें फर से प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं क कसी भी परिवार,समाज, राज्य एवं देश के वकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भू मका होती है महिलाओं के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती इस लए परिवार समाज राज्य एवं देश में महिलाओं की स्थिति को एवं उनके महत्व को देखते हुए महात्मा गांधी जी ने महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया। महात्मा गांधी जी ने अपने जीवन काल में महिलाओं की दयनीय स्थिति को समाज के व भन्न क्षेत्रों में बहुत गरीबी से देखा था इसी लए महिलाओं की स्थिति के संबंध में उन्होंने गंभीरता से वचार कया और उन वचारों को वास्त वक जामा पहचानने पहनाने के लए यथासंभव प्रयास करें और महिलाओं के उत्थान के लए सकारात्मक एवं उपचारात्मक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कार्यवाही की। महिला सशक्तिकरण के संबंध में महात्मा गांधी के वचार आज भी उतने ही प्रासं गक है जितने उनके समय में।

संदर्भ

1. दास, सूर्यनारायण। जुगा जनक महात्मा गांधी। ओ डशा साहित्य अकादमी, 2009। 2. भुइयां, कृष्ण चंद्र। ओ डशारा महियासी महिला। ओ डशा साहित्य अकादमी, 2009।
2. महिलाओं पर गांधी की धारणा, महिला सशक्तिकरण पर गांधी, स्रोत: https://www.mapsofindia.com/perso nalities/Gandhi/Gandhi-and-women.html, 17/09/2019
3. https://www.azquotes.com/quote/602685
4. गैंगराडर, के.डी., गांधी एंड एम्पावरमेंट ऑफ वीमेन, गांधी मार्ग, वॉल्यूम 22, 2000, पृष्ठ.437
5. संह, एस.आर., नेशन लज्म एंड सोशल रिफॉर्म्स इन इं डया (1885-1920), रंजीत प्रंटर्स एंड पब्लिशर्स, दिल्ली, 1968, पृष्ठ 318 की स्थिति और भू मका को प्रभा वत करने वाले महत्वपूर्ण नवाचार हैं।
6. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=
7. महात्मा गांधी का मन; महिलाओं की स्थिति और समाज में भू मका, स्रोत: https://www.mkgandhi.org/momgandhi/c hap60.htm l
8. गांधी, एम. के., यंग इं डया, 14/02/1929
9. https://sodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/199335/ 8/08, Accessed: 25/09/2019 [10] नंदेला, कृष्णन, गांधी महिला सशक्तिकरण, सशक्तिकरण पर